3. सफल रेशम उत्पादक कृषक की कहानी

भारत मे छत्तीसगढ राज्य बहुत ही भाग्यशाली है इस प्रदेश में प्राकृतिक संसाधनो की बहुलता है. छत्तीसगढ राज्य का क्षेत्रफल 135191 वर्ग किलोमीटर है इसका जनसंख्या 2.55 करोड है. यह पूरे देश का 4.14 प्रतिशत है. यह राज्य मध्यप्रदेश से अलग 1 नवम्बर 2001 से प्रभाव में आ गया है. यह राज्य आदिवासी हरिजन दलित वर्ग बाहुल्य क्षेत्र है फिर भी अति पिछडी-पिछडी एवं सवर्ण जाति के लोग भी है. इससे इस राज्य को परिश्रमी राज्य कहा जाता है. इसका वन क्षेत्र 59772 वर्ग किलोमीटर है. भारत वर्ष में कर्क रेखा विभिन्न राज्यो जैसे गुजरात राजस्थान म.प्र. छत्तीसगढ झारखण्ड पश्चिम बंगाल त्रिपुरा मिजोरम से होकर गुजरती है जिससे तापमान अप्रैल मई माह में 45 से 50 डिग्री सेन्टीग्रेड और आर्द्रता 8 से 10 के बीच में आ जाता है. इसे प्राकृतिक रूप से उष्णकटिबन्धीय क्षेत्र (गर्म प्रदेश) कहा जाता है इन राज्यो में तसर रेशम उत्पादन किया जाता है.छत्तीसगढप्रदेशमेरायपुर.बिलासपुर रायगढ.कोरबा.कोरिया.सरगुजा.जसपुर.बस्तर.जांजगीर-चांपा आदि जिलो में तसर रेशम कोसाफलो का उत्पादन किया जाता है. वस्त्र के रूप मे सुन्दर व सुहावन (सुहर) बनाये जाते है.

छत्तीसगढ मानचित्र

बिलासपुर जिले में और जांजगीर चांपा में बहुत ही तसर रेशम कोसाफलो का उत्पादन किया जाता है. पूर्व से आज तक तसर रेशम कोसाफलो का उत्पादन घटते-बढते क्रम में रिकार्ड उत्पादन बढता ही जा रहा है. वनो में पहले से ही व्यतिगत रूप से केवट-भील मल्लाह-(मछुवारा) परिवार मिलकर तसर रेशम का उत्पादन किया करते थे. इनका कीटपालन का तरीका तसर भोज्य पौधो के पेडो में कोसाफलों को टांगकर उपर से मछली पकडने वाला जाल से ढक दिया करते थे. इस विधि से जो भी कोसाफल 400 से 500 मिलता था उससे मछली पकडने का जाल बना लिया करते थे.

तसर रेशम ग्राम-रामपुर तहसील-बलौदा जिला जांजगीर–चांपा कृषको के सामाजिक-आर्थिक स्थित में सुधार निम्न प्रकार से किया जा सकता है. तसर रेशम कोसाफल उत्पादक कृषको को सर्वप्रथम कीटपालन हेतु सर्वे के दौरान ग्राम पंचायत के सरपंच व वार्ड मेंम्बर से मिलकर रेशम के बारे में जानकारी दी गयी और दिमागी तौर पर बदलाव लाया गया. सरपंच ने अपने गॉव के स्तर पर आर्थिक, नैतिक, शैक्षणिक, स्वाथ्य में सुधार लाने के लिए रेशम के कीटपालन कार्य को बेहतर माना और गरीब/जरूरतमंद/अति पिछडा/अनुसूचित/अनूसूचित जन-जाति एवं पिछडा और सवर्ण वर्ग के जातिओ को भी सूचित किया गया जैसा कि एक आम सभा में पंचायत बुलाकर सभी से पूछ-2 कर लाभ-हानि बताया गया जिनको रेशम कीटपालन कार्य अच्छा लगा सुनने से ही वे लोग तैयार हो गये. यहॉ के कीटपालक अभिग्रहित किसान / कृषक बहुत ही कर्मठ परिश्रमी और शान्त स्वभाव के है. रामपुर फार्म में आईएसटीपी के द्वारा अर्जुन पौधे लगाये गये है जो लगभग 56 एकड में है. रामपुर में समिति के माध्यम से कीटपालन किया जाता है रामपुर फार्म मुख्य रूप से सफल रेशम उत्पादक कृषक **श्री सत्यनारायण तिवारी** का समिति/समूह है. वर्ष में दो फसल डाबा द्विप्रज का कीटपालन कर कोसाफलो का उत्पादन करते है. कीटपालक समिति में 15 सदस्य है ये लोग बडे अनुभवी तरीके अपनाकर और प्रशिक्षण प्राप्त तकनीक को अपना कर कीटपालन करने से उन सदस्यो को फायदा ही फायदा है इसमें हरिजन आदिवासी दलित वर्ग अति पिछडी – पिछडा एवं गरीब सवर्ण जाति के सदस्य सम्लित है.

आज के समायनुसार प्राकृतिक रूप से रामपुर तसर बीज फार्म में कीटपालन कार्य कर कोसाफलो का उत्पादन बहुत ही अच्छा होता आ रहा है. कीटपालन के दौरान वैज्ञानिक व तकनीकी ज्ञान व अनुभव को केन्द्रीय रेशम बोर्ड के वैज्ञानिक व तकनीकी कर्मचारी के द्वारा अवगत कराया जाता है.

सत्यनारायण तिवारी एवं समूह का विगत तीन वर्षो के कोसा उत्पादन एवं आमदनी का ब्यौरा.

क्रं.	वर्ष/फसल	स्त्रोत	प्रजाति	स्व.डि.स.	उत्पादन	औसत	बीज कोसा (संख्या)	आय (रू.₹)
1	2016-17 प्रथम	BSMTC, BSP	DBV	1500	158425	105.62	153500	307000.0

2	2016-17 द्वितीय	BSMTC,BSP	DBV	1000	63075	63.08	22500	67500.00
3	2017-18 प्रथम	BSMTC,BSP	DBV	1000	115615	115.62	112500	225000.0
4	2017-18 द्वितीय	BSMTC,BSP	DBV	1500	144945	96.63	138500	415500.0
5	2018-19 प्रथम	BSMTC,BSP	DBV	1860	114660	61.64	100400	200800.0
6	2018-19 द्वितीय	BSMTC,BSP	DBV	2400	166370	69.3	144100	432300.0

प्रक्षेत्र नि:संक्रमण कीटपालन प्रक्षेत्र सत्यनारायण तिवारी

के.रे.बो. निम्न मापदण्डो के अनुसार बीज कोसा क्रय करता है.

क्रमांक	विवरण	कोसा का कवच भार	दर प्रति हजार
1	प्रथम फसल कोसाफल- DBV	1.4 ग्राम	2000.00
2	द्वितीय फसल कोसाफल- DBV	1.7 ग्राम	3000.00

उक्त दिये गये मापदण्डो के अनुसार रामपुर के अभिग्रहित कृषकों के द्वारा बीज कोसाफलो का उत्पादन किया जा रहा है जोकि एक सफल रेशम कीटपालक के रूप में अग्रसर है.

अभिग्रहित कृषको से बीज कोसाफल केन्द्रीय रेशम बोर्ड के केन्द्र द्वारा क्रय करने के बाद शेष बचे कोसाफलो का क्रय निम्न मापदण्डो के आधार पर छ.ग. राज्य रेशम विभाग द्वारा किया जाता है.-

क्रमांक	विवरण	कोसा का कवच भार	दर प्रति हजार रूपये
1	कोसाफल ग्रेड - 1	1.4 ग्राम से अधिक	1350
2	कोसाफल ग्रेड – 2	1.20 ग्राम से 1.39 ग्रा.	1000
3	कोसाफल ग्रेड – 3	0.85 ग्रा.1.19 ग्रा	650
4	कोसाफल ग्रेड - 4	0.85 से कम	300

उनके द्वारा पूर्व में परम्परा गत तरीके से कीटपालन कार्य किया जाता था. जिससे लाभ कम प्राप्त होता था किन्तु कीटपालन में नई तकनीक अपना कर जैसे प्रक्षेत्र का साफ-सफाई, 9:1 के अनुपात में चूना:ब्लीचिंग से प्रक्षेत्र का नि:संक्रमण करना, जीवन सुधा पाउडर का उपयोग करना, लेबेक्स पाउडर का उपयोग करना एवं अन्य तकनीकी अपनाकर उसके अनुसार कार्य करने से उत्पादन में वृदिध् हुई जिसका आर्थिक एवं सामाजिक स्तर पर सुधार हुआ. जिससे इस समूह की उन्नति देखकर आस-पास के अन्य कीटपालको के उपर प्रभाव पड़ा और वे लोग भी नई तकनीक अपनाकर कार्य करने के लिए अग्रसर हुए.

लेखक – श्री राकेश कुमार
तकनीकी सहायक
बु.बी.प्र.व.प्र.के., पेण्डारी,

तसर कीटपालक – श्री सत्यनारायण तिवारी
आधार नम्बर - 2127 5626 8655
ग्राम - रामपुर